मोल्डावियन लोक कथा

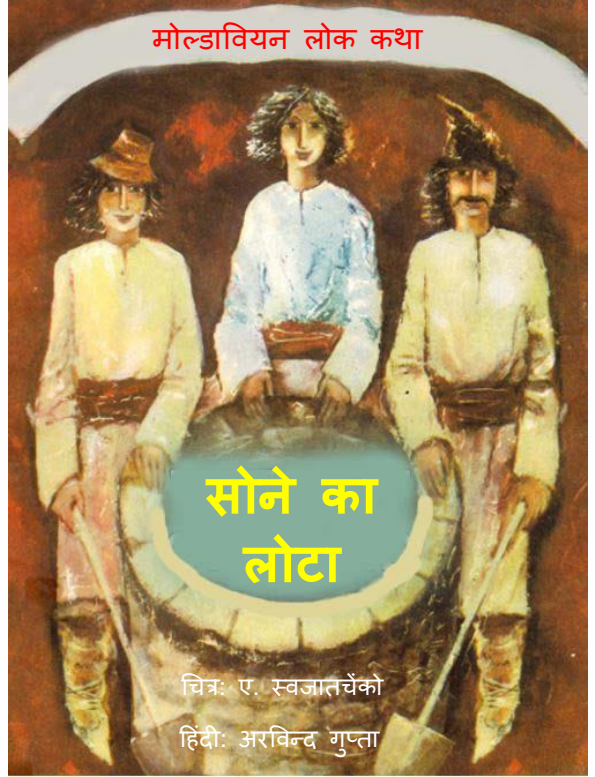

सोने का लोटा

चित्र: ए. स्वजातचेंको

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

एक समय की बात है, एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे. वो आदमी बड़ा मेहनती था और वो सुबह से लेकर रात तक मेहनत करता रहता था. परन्तु उसके बेटे उसके जैसे बिल्कुल नहीं थे. वे तीनों मजबूत और स्वस्थ लड़के थे, लेकिन वे भयानक आवारा और निकम्मे थे और कुछ भी काम नहीं करते थे.

जब पिता खेत, बगीचे और घर में काम करते थे, तब बेटे पेड़ के नीचे छाया में बैठकर गप्पे मारते थे या फिर मछली पकड़ने के लिए नदी पर चले जाते थे.

"तुम अपने पिता की कभी मदद क्यों नहीं करते?" उनके पड़ोसियों ने पूछा.

"हमें क्यों मदद करें!" बेटों ने उत्तर दिया. "पिताजी हमारा बहुत ख़याल रखते हैं और वे सारे काम ख़ुद ही बड़े अच्छे से कर लेते हैं."

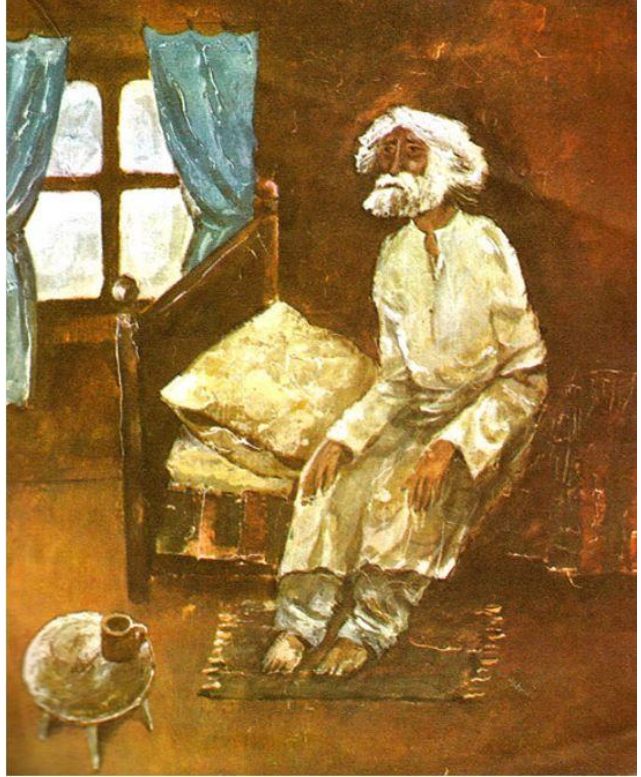

और इस तरह साल-दर-साल बीतता गया.

बेटे वयस्क हो गए और पिता बूढ़े हो गये और अब वो पहले की तरह काम नहीं कर पाते थे. फिर घर के चारों ओर का बगीचा जंगल जैसा हो गया और उनके खेत, जंगली घास और खरपत से भर गए. बेटों ने वो सब देखा, लेकिन वे इतने आलसी थे कि उन्होंने उसके बारे में कुछ भी नहीं किया.

"मेरे बेटों, तुम घंटों बेकार क्यों बैठे रहते हो?" उनके पिता ने पूछा. "मैंने जीवन भर कड़ी मेहनत की, और अब मेहनत करने की तुम्हारी बारी है."

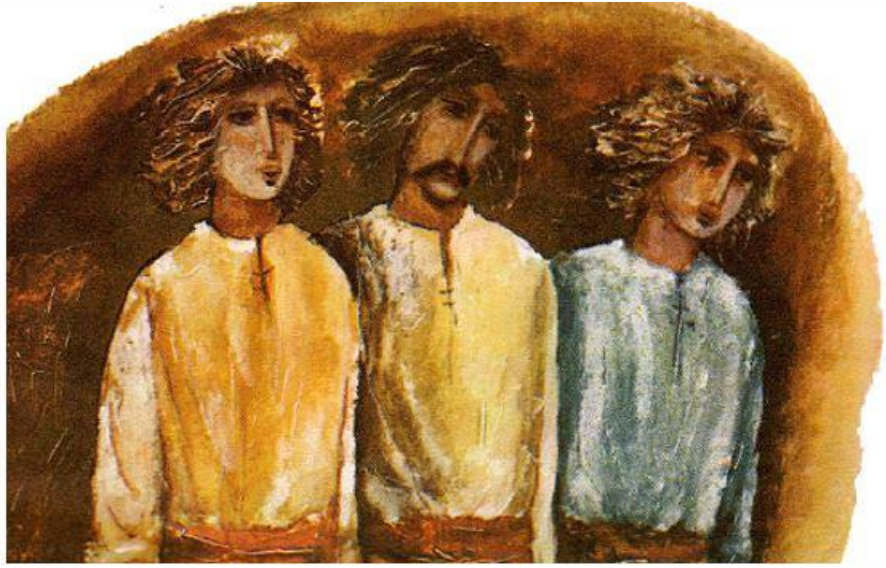

लेकिन पिता की बात से लड़कों पर कोई फर्क नहीं पड़ा. बेटों ने पिता की बात नहीं सुनी और अपने अंगूठे हिलाने के अलावा और कुछ नहीं किया.

बेटों के इतने आवारा होने से बूढ़ा आदमी इतना परेशान हुआ कि वो बीमार पड़ गया और उसने बिस्तर पकड़ लिया.

अब परिवार को काम करने वालों की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी. झोंपड़ी के चारों ओर की खरपत और घास इतनी घनी हो गई थी कि झोंपड़ी मुश्किल से ही दिखाई देती थी.

एक दिन बूढ़े आदमी ने अपने बेटों को अपने बिस्तर के पास बुलाया.

"मेरा अंत अब निकट आ गया है, मेरे बेटों." उन्होंने कहा, "तुम मेरे बिना कैसे रहोगे, तुम एकदम आवारा हो?"

फिर बेटे फूट-फूटकर रोने लगे.

"आप हमें अपनी आखिरी सलाह दीजिए, पिताजी." सबसे बड़े बेटे ने विनती की, "हमें बताईए कि हम क्या करें."

"ठीक है!" पिता ने कहा. "मैं तुम तीनों को एक रहस्य बताता हूं. तुम्हें पता है कि तुम्हारी मां और मैंने सालों तक कड़ी मेहनत की थी. वर्षों तक, थोड़ा-थोड़ा करके, हमने अपनी कमाई को जोड़ा और अंत में हमारे पास लोटा भर सोना हो गया. मैंने लोटे को घर के पास ही कहीं दफना दिया. अब मुझे याद नहीं है कि मैंने उसे कहां गाढ़ा था. लेकिन तुम लोग उसे ढूंढो. और जब तुम उसे खोज लोगे तो फिर तुम अमीर हो जाओगे और तुम्हें कभी कोई कमी महसूस नहीं होगी."

इसके साथ ही पिता ने अपने बेटों से अलविदा कहा और आखिरी सांस ली.

पुत्रों को बहुत दुःख हुआ और वे बहुत देर तक रोते रहे और दुःखी रहे. एक दिन उनमें से सबसे बड़े ने कहा:

"ठीक है, भाइयों, हम वास्तव में गरीब हैं, हमारे पास रोटी खरीदने तक के लिए भी पैसे नहीं हैं. चलो हम वैसा ही करें जो पिताजी ने मरने से पहले हमसे कहा था और हम उस सोने के लोटे की तलाश करें जिसका उन्होंने ज़िक्र किया था."

फिर उन्होंने अपनी कुदालें उठाईं और झोंपड़ी के पास खुदाई करने लगे. उन्होंने खुदाई की और खुदाई की, लेकिन उन्हें सोने का लोटा कहीं नहीं मिला.

बीच वाले भाई ने कहा:

"अगर हम इस तरह खोदेंगे, मेरे भाइयों, तो हमें लोटा कभी नहीं मिलेगा. चलो अब झोपड़ी के चारों तरफ की जमीन को खोदते हैं!"

तीनों भाई सहमत हो गये. उन्होंने फिर से अपनी कुदालें उठाईं और झोंपड़ी के चारों ओर जमीन खोद डाली, लेकिन उन्हें वहां भी सोने का कोई लोटा नहीं मिला.

"चलो हम कुछ और खोदें, लेकिन कुछ अधिक गहराई तक," सबसे छोटे भाई ने कहा, “शायद पिताजी ने सोने का घड़ा काफी नीचे दफना दिया हो.”

एक बार फिर भाई सहमत हुए: वे लोटे को खोजने के लिए बहुत उत्सुक थे.

वे काम पर लग गए, और सबसे बड़ा भाई, जो काफी समय से खुदाई कर रहा था, को अचानक महसूस हुआ कि उसकी कुदाल किसी बहुत बड़ी और कठोर चीज़ से टकराई है. उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, क्योंकि उसने सोचा कि उसे सोने का लोटा मिल गया था. उसने अपने भाइयों को जल्दी से अपने पास आने के लिए बुलाया.

दोनों भाई दौड़ते हुए आए और अपने वे भी बड़े भाई की खुदाई में मदद करने लगे.

उन्होंने बहुत मेहनत की, लेकिन उन्होंने जो कुछ जमीन से खोदकर निकाला वो कोई सोने का कलश नहीं, बल्कि एक बड़ा पत्थर था.

उससे भाई निराश हो गये.

"हम उस पत्थर का क्या करेंगे?" उन्होंने कहा. "उसे यहां छोड़ने से कोई फायदा नहीं होगा. चलो उसे ले जाकर किसी नाले में फेंक दें."

उन्होंने जल्दी ही वो काम किया. उन्होंने पत्थर हटा दिया और फिर से खुदाई शुरू की. वे पूरे दिन काम करते रहे. वो खाने-पीने या आराम करने के लिए भी नहीं रुके और फिर उन्होंने पूरा बगीचा खोद डाला. उनके फावड़ों के नीचे की मिट्टी अच्छी और मुलायम हो गई, लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बावजूद उन्हें सोने का कोई लोटा कहीं नहीं मिला.

"अब जब हमने बगीचा खोद ही डाला है, तो उसे उसी हालत में छोड़ने से कोई फायदा नहीं होगा. चलो अब हम वहां पर अंगूर की बेलें लगा देते हैं!" सबसे बड़े भाई ने सुझाव दिया.

"वो एक अच्छा विचार है!" दोनों छोटे भाई उससे सहमत हुए. "उससे कम-से-कम हमारी मेहनत बर्बाद तो नहीं होगी."

इसलिए उन्होंने कुछ अंगूर की बेलें लगाईं और सावधानीपूर्वक उनकी देखभाल की.

कुछ समय बाद उनके पास एक बढ़िया, बड़ा अंगूर का बगीचा था जहां अच्छे, रसीले और मीठे अंगूर उग रहे थे.

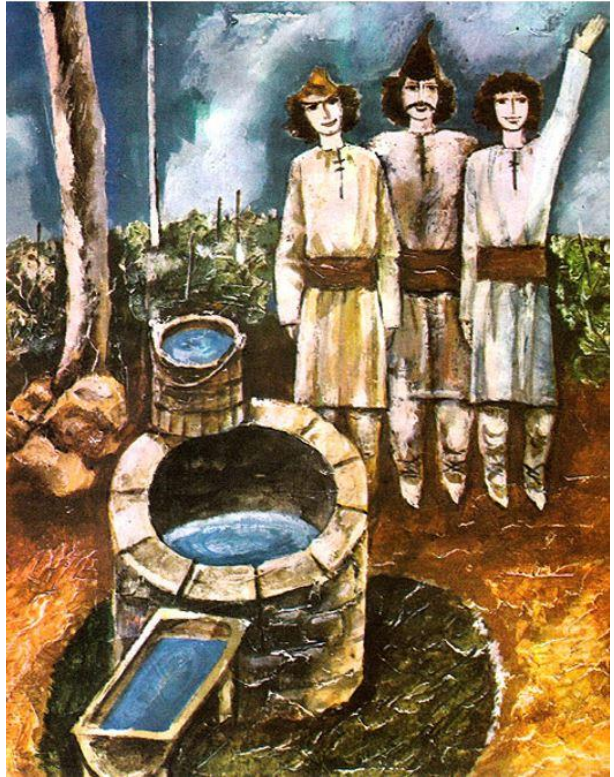

भाइयों ने भरपूर फसल इकट्ठी की. उन्होंने अपनी ज़रुरत के लायक अंगूरों को अलग रखा और बाकी को मुनाफे पर बेच दिया.

सबसे बड़े भाई ने कहा:

"चलो आखिर में हमारी मेहनत व्यर्थ नहीं गई. हमने अपना बगीचा खोदा और फिर हमें वो खजाना मिला जिसके बारे में पिताजी ने मरने से पहले हमें बताया था."